योगिनी एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Yogini Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 52, controlling revision 336433. Also compared: Wikisource revision API — exact complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 52 — complete electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 52 — full English comparison only, prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.52.1–34, Sanskrit Wikisource revision 336433, not a transcription of the original text.

योगिनी का नाम और हेममाली का विलम्ब

KATHA 6.52.1–14

युधिष्ठिर वासुदेव से आषाढ़ के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम पूछते हैं। कृष्ण उसे योगिनी बताते हैं और पाप-क्षय, मुक्ति तथा संसार-सागर में डूबे लोगों के लिए नाव के रूपक से उसकी प्रशंसा करते हैं। फिर वे एक पुराण-कथा कहते हैं। अलका में राजराज कुबेर शिव-भक्ति में लगे रहते हैं। उनके लिए फूल लाने वाला सेवक हेममाली है और उसकी पत्नी विशालाक्षी है।

हेममाली मानस सरोवर से फूल लेकर घर रुक जाता है और पत्नी के प्रेम में समय का ध्यान नहीं रखता। देव-स्थान में शिव की पूजा करते कुबेर दोपहर तक फूलों की प्रतीक्षा करते हैं। वे यक्षों से बार-बार विलम्ब का कारण पूछते हैं। यक्ष हेममाली के पत्नी के साथ घर रहने की बात बताते हैं। क्रुद्ध कुबेर उसे तुरन्त बुलाते हैं। विलम्ब जानकर भयभीत हेममाली बिना स्नान किये सामने आता है। कुबेर का क्रोध बढ़ता है और वे इसे देव-पूजा की अवहेलना कहते हैं।

यहाँ विलम्ब और दाम्पत्य का वर्णन पात्र की कहानी है, पत्नी पर दोष डालने या कर्मचारी के अपमान को उचित बनाने का नियम नहीं। धार्मिक माहात्म्य की भाषा को मुक्ति या जीवन-सुधार की निश्चित गारंटी न समझें।

Yudhishthira asks Vasudeva about Ashadha's dark-fortnight Ekadashi. Krishna names Yogini, praising release from sin and liberation and likening it to a boat for people immersed in worldly existence. He introduces an ancient account. In Alaka, Kubera, called Rajaraja, is devoted to Shiva. His flower attendant is Hemamali, whose wife is Vishalakshi.

After collecting flowers from Manasa lake, Hemamali stays home, absorbed in his wife's company and unaware of the time. Kubera waits for the flowers at midday while worshipping Shiva in the shrine. He repeatedly asks the yakshas why the attendant is late. They report that Hemamali is at home with his wife. Angry Kubera summons him immediately. Frightened at the delay, Hemamali arrives without bathing. Kubera's anger increases and he calls this neglect of divine worship.

The delay and marriage belong to a character account, not a rule blaming a wife or justifying humiliation of workers. Devotional praise is not an assured promise of liberation or improvement in life.

शाप, कष्ट और मार्कण्डेय से पूरी भेंट

KATHA 6.52.15–27

कुबेर हेममाली को अठारह प्रकार के कुष्ठ से घिरने, पत्नी से अलग होने और अपने स्थान से हट जाने का शाप देते हैं। पाठ का आगे का स्थान-संबंधी शब्द स्पष्ट नहीं है; यहाँ उससे पृथ्वी या किसी निश्चित लोक की नयी यात्रा नहीं बनाई गई। कथा में हेममाली स्थान से गिरता है और बहुत दुख तथा शारीरिक पीड़ा सहता है। दिन में सुख और रात में नींद नहीं मिलती; छाया और गर्मी दोनों में कष्ट है। शिव-पूजा के प्रभाव से उसकी स्मृति बनी रहती है और वह अपना पुराना काम याद करता है।

भटकते हुए वह हिमाद्रि पहुँचकर तपस्वी मार्कण्डेय को देखता है, जिनकी आयु ग्रंथ ब्रह्मा के समान बताता है। वह दूर से प्रणाम करता है। मुनि उसे काँपते देखकर मदद के लिए पास बुलाते हैं और उसकी पीड़ा तथा निंदित अवस्था का कारण पूछते हैं। हेममाली अपना नाम, कुबेर की सेवा, मानस से प्रतिदिन कमल लाना और शिव-पूजा के समय देना बताता है। वह पत्नी के साथ रहने में एक दिन समय भूलने, क्रुद्ध कुबेर के शाप, बीमारी और अलगाव की पूरी बात स्वीकारता है। अच्छे लोगों की सहायता-भावना पर विश्वास करके मार्गदर्शन माँगता है।

कुष्ठ और उसके अठारह रूप प्राचीन कथा की शब्दावली हैं, किसी वर्तमान व्यक्ति का निदान नहीं। बीमारी नैतिक दोष, वैवाहिक प्रेम या शाप का प्रमाण नहीं है। पीड़ित व्यक्ति की गरिमा और आवश्यक चिकित्सा बनी रहती हैं; कथा का सामाजिक अपमान या दंड आज के व्यवहार का आदर्श नहीं।

Kubera curses Hemamali with eighteen forms of kushtha, separation from his wife and removal from his position. The following destination wording is unclear; no new journey to Earth or another definite world is manufactured from it. In the story he falls from his place and suffers deep distress and bodily pain. He has no daytime ease or nighttime sleep and suffers both in shade and heat. The text attributes his retained memory to Shiva worship, so he remembers his former work.

Wandering to Himadri, he encounters the ascetic Markandeya, whose lifespan is compared with Brahma's. He bows from a distance. Seeing him tremble, the sage calls him closer to help and asks about his suffering and condemned condition. Hemamali explains his name, service to Kubera, daily lotuses from Manasa and their delivery for Shiva worship. He acknowledges forgetting the time while with his wife and describes Kubera's anger, curse, illness and separation. Trusting good people's readiness to help, he asks for guidance.

Kushtha and its eighteen forms are ancient narrative vocabulary, not a diagnosis of a present-day person. Illness is not proof of moral fault, marital affection or a curse. A suffering person's dignity and necessary healthcare remain intact; social humiliation and punishment in the story are not models for present-day conduct.

मार्गदर्शन और पूरा चयनित समापन

KATHA 6.52.28–34

मार्कण्डेय कहते हैं कि हेममाली ने झूठ नहीं बोला, इसलिए वे उसे शुभ व्रत का उपदेश देंगे। वे आषाढ़ कृष्ण योगिनी का पालन और उसके पुण्य से कुष्ठ दूर होने की बात कहते हैं। यह मुनि का कथानक के भीतर आश्वासन है, पाठक के लिए बीमारी का उपचार-वचन नहीं। हेममाली दंडवत गिरता है; मुनि उसे उठाते हैं और वह हर्षित होता है। कथा में उनके निर्देश से व्रत करने पर अठारह रूपों का कष्ट दूर होता है और हेममाली सुखी होता है।

कृष्ण इसी प्रकार योगिनी-व्रत का वर्णन पूरा करते हैं। उसके फल की तुलना अट्ठासी हजार द्विजों को भोजन कराने से है। बड़े पाप शांत होने, महान पुण्य और पढ़ने-सुनने से पाप-मुक्ति की प्रशंसा भी आती है। इसके बाद अध्याय 52 का अलग समापन-वाक्य उमापति–नारद संवाद में आषाढ़ कृष्ण योगिनी के माहात्म्य को नाम देता है। तत्काल संवाद कृष्ण–युधिष्ठिर का है। चयनित अध्याय सुख और राहत पर समाप्त होता है; कुबेर के पास लौटने या विशालाक्षी से पुनर्मिलन का अलग दृश्य इसमें नहीं है।

कथा से चिकित्सा छोड़ना, भूखा या प्यासा रहना, रात भर जागना या बहुत लोगों को भोजन कराने का अनिवार्य आदेश न निकालें। भोजन, पानी, आराम और जरूरी उपचार उपलब्ध रखें। शाप, स्वास्थ्य-सुधार और पुण्य धार्मिक कथा के दावे हैं, निश्चित चिकित्सा-परिणाम या पीड़ित व्यक्ति पर दोष नहीं।

Markandeya says that because Hemamali spoke truth rather than lies, he will teach him an auspicious observance. He names Ashadha's dark Yogini and promises that its merit will remove kushtha. This is the sage's assurance within the narrative, not a treatment promise to a reader. Hemamali prostrates; the sage lifts him up and he is delighted. Following the advice in the story, he observes the vow, the eighteen forms of suffering disappear and he becomes happy.

Krishna concludes the account, comparing its merit with feeding eighty-eight thousand dvijas. Great sin is said to be quieted, great merit obtained and reading or hearing praised as release from sin. A separate chapter-52 colophon names Ashadha's dark Yogini within Umapati–Narada framing. The immediate dialogue remains Krishna–Yudhishthira. The selected ending reports relief and happiness; it contains no separate scene of return to Kubera or reunion with Vishalakshi.

Do not extract commands to abandon healthcare, withhold food or water, stay awake all night or feed a huge required gathering. Food, water, rest and necessary treatment remain available. Curse, recovery and merit are claims in a religious narrative, not assured clinical outcomes or grounds to blame a suffering person.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Yogini Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.52.1–34, revision 336433, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.